इकाई-I

3. वृंद

रचनाकार

वृंद मध्यकालीन युग के सरल, सुबोध एवं प्रभावपूर्ण कवियों में प्रथम श्रेणी में गिने जा सकते हैं। उनका प्रभाव जन-मानस पर उतना ही है जितना किसी मंच के कवि का श्रोताओं पर पड़ता है।

वृंद का पूरा नाम वृंदावन था। परंतु कविता करते हुए इन्होंने अपने को वृंद कहा है। इनका जन्म बीकानेर के मेंड़ता नामक स्थान पर हुआ था। कहा जाता है कि वे औरंगज़ेब और उनके पुत्र मुअज़्ज़न के दरबार में राज्याश्रित कवि थे। मुअज़्ज़न के पुत्र और औरंगज़ेब के पौत्र अज़ीमुश्शान के अध्यापक रहे हैं। उनके साथ इन्हें अनेक स्थानों का भ्रमण करने का अवसर मिला। इनकी मृत्यु किशनगढ़ में हुई थी।

वृंद की रचनाएँ हैं- वृंद विनोद सतसई, नीति सतसई, गायक सतसई, भाव पंचाशिका, वचनिका, पवन पचीसी।

इनके साहित्य में जनसामान्य की वाणी दिखायी देती है। वृंद के दोहे बहुत प्रसिद्ध और प्रचलित हैं। इन दोहों में व्यक्ति अथवा समाज-सुधार, जीवन-आदर्शों आदि का बहुत ही सरल भाषा में वर्णन किया गया है। वृंद के दोहे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। वृंद की रचना-शैली मुक्तक है। इनकी शैली में गंभीरता अथवा जटिलता नहीं है। जो कुछ कहा गया है वह हृदयस्पर्शी और प्रभावपूर्ण है।

प्रस्तावना प्रसंग

बुरे लगत सिख के वचन,
हिये बिचारौ आप।
करुबे भेसज बिन पिये,
मिटै न तन को ताप।।

प्रश्न

1. सीख के वचन कैसे लगते हैं?
2. कवि की बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?
3. हमारे जीवन में सीख के वचन का क्या महत्व है?

भूमिका

आधुनिक समाज में तेजी से हो रहे नैतिक मूल्यों के ह्रास की चुनौती से निपटने के लिए वृंद के दोहों की विशेष उपयोगिता है। इस महत्व को ध्यान में रखते हुए उनके कुछ दोहे प्रस्तुत हैं। आइए इन्हें पढ़ें। इनकी उपयोगिता को समझें और इनकी नीतियों को अपनाएँ, साथ ही साथ साहित्यिक रसास्वादन करें।

SCERT TELANGANA

वृंद के दोहे

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत जुद्ध में, नहिं सिंगार सुहात।। ।1।

प्रान तुषातुर के रहे, थोरेहूँ जलपान।
पीछे जलभर सहस घट, डारे मिलत न प्रान।। ।2।

रहे समीप बड़ेन को, होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त है, वृच्छ बराबर बेल।। ।3।

मधुर वचन तेजात मिटे, उत्तम जन अभिमान।
तनिक सीत जल सो मिटे, जैसे दूध उफान।। ।4।

सबै सहायक सबल के, कोई न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहि देत बुझाय।। ।5।

जैसे बंधन प्रेम को, तैसो बंधन और।
काठहि भेदे कमल को, छेद न निकरे भौर।। ।6।

प्रकृति मिले मत मिलत है, अनमिलते न मिलाय।
दूध दही से जमत है, कांडी ते फटि जाय।। ।7।

उत्तम जन के संग में, सहजे ही सुखभासि।
जैसे नृप लावै इतर, लेत सभा जनवासि।। ।8।

ज्योति सरूपी हिये बसै, सब सरीर में ज्योति।
दीपक धरिये ताक में, सब घर आभा होति।। ।9।

भेस बनाये सूर को, कायर सूर न होय।
खाल उढ़ाए सिंह की, स्यार सिंह नहि होय।। ।10।

© SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. वृंद ने कहा है कि मधुर वचन के प्रयोग से अभिमानियों का अभिमान कम हो जाता है। गर्व करना हमारे लिए किस प्रकार हानिकारक सिद्ध हो सकता है। चर्चा कीजिए।
2. समय पूर्ण होने के बाद कार्य करने की गणना असफलता में होती है। आप अपना काम समय पर करने के लिए क्या उपाय करेंगे?

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. यह किस दोहे का संदेश है?
   - क. सही जगह पर सही बात शोभा देती है।
   - ख. अब पछताए क्या होत जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत।
   - ग. भले की संगति में रहने से भलाई ही होती है।
2. भौंरा कमल के फूल को छेद कर बाहर क्यों नहीं निकल पाता?
3. शेर की खाल पहनने से कोई व्यक्ति शेर नहीं हो जाता। यह उदाहरण वृंद ने अपने किस दोहे में दिया है?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. सब शक्तिशाली व्यक्ति का साथ क्यों देते हैं?
2. वृंद के अनुसार प्रकृति के खिलाफ़ जाने से काम बिगड़ जाता है। उन्होंने इसे किस प्रकार समझाया है?
3. "ज्योति सरूपी हिये बसै, सब सरीर में ज्योति।" इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति में रहना किस प्रकार लाभदायक है? इस बारे में वृंद ने क्या कहा है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

रहीम द्वारा रचित निम्नलिखित दोहे पढ़िए। पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पावस देखि रहीम मन कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछत कौन।।1।।
जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।2।।

प्रश्न :

1. पावस ऋतु में कोयल क्यों मौन साध लेती है?
2. रहीम ने सज्जन व्यक्ति की तुलना किससे की है?
3. 'बिन अवसर की बात' और 'वर्षा ऋतु में कोयल का मौन हो जाना' में क्या समानता है?

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. जो छात्र समय पर अपना कार्य नहीं करते, उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है?
2. मीठे वचन से चारों ओर सुख फैलता है। इससे बिगड़े काम भी बन जाते हैं। इसके विपरीत कठोर वचन बोलने से क्या परिणाम हो सकते हैं?
3. आप अच्छी संगति किसे मानेंगे? धनवान की संगति को या विद्वान की। अपने उत्तर का कारण बताइए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. वृंद ने अपने दोहों के माध्यम से जीवन की किन सच्चाइयों पर प्रकाश डाला है?
2. वृंद अपनी नीति सिद्ध करने के लिए उसका एक व्यावहारिक उदाहरण देते हैं। ऐसा वे क्यों करते होंगे? इसी प्रकार उनके दोहों की अन्य विशेषताएँ लिखिए।

❖ सृजनात्मक कार्य

इन दोहों का गायन प्रस्तुत कीजिए। अपनी अनुभूति डायरी में लिखिए।

❖ प्रशंसा

आज के वैज्ञानिक युग के प्रभाव में इंसान यांत्रिक होता जा रहा है। उसकी सामाजिकता और नैतिकता कहीं खोती जा रही है। इन्हें बनाए रखने के लिए आप क्या प्रयास करना चाहेंगे?

भाषा की बात

वृंद ने **जुद्ध** शब्द का प्रयोग किया है, जिसका प्रचलित रूप **युद्ध** है। इसी प्रकार के कुछ और शब्द पाठ से चुनिए और उनका प्रचलित रूप लिखिए।

परियोजना कार्य

कुछ महापुरुषों के नीति संबंधी अनमोल वचन संकलित कीजिए और लिखिए।

SCERT TELANGANA